'गांधी का लेखकीय एवं वक्ता रूप रहा सहज'

नई दिल्ली, 12 मार्च (नवोदय टाइम्स): साहित्य अकादमी के स्थापना दिवस के अवसर पर 'महात्मा गांधी- एक लेखक और वक्ता के रूप में' विषय पर व्याख्यान देते हुए रामचंद्र गुहा ने कहा कि गांधी रवींद्रनाथ टैगोर की तरह सृजनात्मक लेखक तो नहीं थे लेकिन उनका लेखन विभिन्न भाषाओं (गुजराती, अंग्रेजी और हिंदी) में अलग-अलग तरीकों से व्यक्त होता था।

गुजराती में जहां वे भारतीय जनता से संवाद करते दिखते हैं वहीं अंग्रेजी में उनका लेखन ब्रिटिश सरकार से राजनीतिक संवाद करता हुआ नजर आता है। उन्होंने उनके लेखन के तीन उदाहरण पेश किए जिनमें प्राकृतिक आपदा, दूसरा मानवनिर्मित आपदा और तीसरा उदाहरण 1940 में सर एंड्रयूज की श्रद्धांजलि से जुड़ा हुआ

साहित्य अकादमी ने मनाया स्थापना दिवस

था। इन उदाहरणों के सहारे उन्होंने कहा कि इन तीनों में उनकी भाषा घटनाओं के अनुसार परिवर्तित हुई है।गांधी भूकंप की घटना में जानमाल को हुए नुकसान को बड़ी संवेदना से वर्णित करते हैं तो बम्बई की घटना में हिंदू-मुस्लिमों द्वारा पारसी और ईसाइयों पर किए गए हमलों की भर्त्सना करते हैं।

लुई फिशर की पुस्तक के एक उदाहरण से उन्होंने बताया कि गांधी एक वक्ता के रूप में आक्रामक नहीं थे बल्कि बोलते समय बहुत ही सहज ढंग से अपनी बात रखते थे। उन्होंने गांधी के हिंद स्वराज के एक उदाहरण के आधार पर बताया कि गांधी का पूरा लेखन चार मुख्य विचारों सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक उन्नति, सांस्कृतिक एकता और अहिंसा पर केंद्रित है। कार्यक्रम में अकादमी सचिव के. श्रीनिवासराव ने बताया कि इससे पहले साहित्य अकादमी स्थापना व्याख्यान कपिला वात्स्यायन, एस.एल. भैरप्पा और सीताकांत महापात्र जैसे प्रख्यात विद्वानों द्वारा दिया जा चुका है।

.com 13 मार्च, 2019 ▶ बुधवार पंजाब केसरी
DELHI

संक्षिप्त समाचार...

साहित्य अकादमी में स्थापना दिवस मनाया

नई दिल्ली, (पंजाब केसरी) : साहित्य अकादेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर 'महात्मा गाधी एक लेखक और वक्ता के रूप में' विषयक व्याख्यान देते हुए रामचंद्र गुहा ने कहा कि गांधी रवींद्रनाथ टैगोर की तरह सृजनात्मक लेखक तो नहीं थे, लेकिन उनका लेखन विभिन्न भाषाओं में, जिनमें गुजराती, अंग्रेजी और हिंदी थी, में अलग-अलग तरीकों से व्यक्त होता था। गुजराती में जहां वे भारतीय जनता से संवाद करते दीखते हैं वहीं अंग्रेजी में उनका लेखन ब्रिटिश सरकार से राजनीतिक संवाद करता हुआ नजर आता है। उन्होंने उनके लेखन के तीन उदाहरण पेश किए, जिनमें से पहला प्राकृतिक आपदा से संबंधित था जो सन् 1934 के बिहार-भूकंप के वर्णन का था। दूसरा मानवनिर्मित आपदा के बारे में था जो 1921 में अहयोग आंदोलन के दौरान प्रिंस वेल्स के बम्बई आगमन के विरोध को लेकर था। तीसरा और अंतिम उदाहरण 1940 में सर एंड्रूज की श्रद्धांजलि से जुड़ा हुआ था। इन उदाहरणों के सहारे उन्होंने कहा कि इन तीनों में उनकी भाषा घटनाओं के अनुसार परिवर्तित हुई है। गांधी भूकंप की घटना में जानमाल को हुए नुकसान को बड़ी संवेदना से वर्णित करते हैं तो बम्बई की घटना में हिंदू-मुस्लिमों द्वारा पारसी और ईसाइयों पर किए गए हमलों की भर्त्सना करते हैं।